PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 8, ISSUE 1

लहुकथाओं में राजननीतिक व्यंग्य

डॉ. धनिराम अहिरवार
सहायक प्राध्यापक हिंदी
शासकीय स्नात्कोत्तर महाविद्यालय टीकमगढ़
(म. प.) भारत

सारांशः–

लघुकथा एक स्वतंत्र और स्वायत्त विधा के रूप में स्थापित है। लघुकथा हमारे वृहत् जीवनानुभवों की संक्षिप्त, सुगठित किन्तु तीक्ष्ण अभिव्यक्ति है। यह वर्णन या विवरण के बजाय संश्लेषण में विश्वास करने वाली साहित्यिक विधा है, जिसकी परिणति प्रायः विस्फोटक होती है। इक्कीसवी सदी तक आते–आते इस विधा ने नए–नए अनुभव क्षेत्रों और अभिव्यक्तिगत आयामों को छूते हुए अपनी अनन्य पहचान बना ली है।

मूल शब्दः– लघुकथा, संक्षिप्त, अभिव्यक्ति, आयाम,

प्रस्तावनाः–

राजनीतिक लघुकथाओं का वातावरण मुख्यतः राजनीतिक घटनाओं और राजनीतिक चरित्रों के आधार पर बनता है। इन लघुकथाओं में चुनावी हथकण्डे, सत्याग्रह आंदोलन जैसी घटनाओं का चित्रण स्वाभाविक ढंग से किया जाता है।

हिंदी लघुकथा के आठवें, नौंवे व दशवें दशक की लघुकथाओं में राजनीतिक परिवेश अथवा राजनीतिक के तात्कालिक चेहरे के प्रति गहरी प्रतिक्रिया व्यक्त हुई है। वर्तमान परिवेश को केन्द्र में रखकर समाज पर पड़ने वाले राजनीति के प्रभाव, मंत्रिमंडल, पुलिस विभाग के भ्रष्ट आचरण खोखली राजनीति और परिणामस्वरूप खण्डित होती राष्ट्रीय एकता आदि की विशुद्ध व्यंजना हुई है।

देश में समय-समय पर होती राजनीति की अस्थिरता व्यक्ति के मानस को प्रभावित करती रहती है। ऐसी ही राजनीति की अस्थिरता के कारण 18वीं सदी के आसपास पूरे भारत का राजतंत्र पतोन्मुख हो गया था। मुगल साम्राज्य के डगमगाते ही सन् 1833 में ईस्ट इंडिया कंपनी ने राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश किया। इसी साम्राज्य के विरूद्ध सन् 1857 का विप्लव हुआ। ‘‘1857 का स्वाधीनता संग्राम सफल न बना। 1858 में कंपनी शासन खत्म हुआ और ब्रिटिश सरकार को शासन सौंप दिया। इसी समय (1875-1914) कांग्रेस का जन्म कह सकते हैं।’’[प] भारत में अंग्रेजों की नीति हमेशा ‘फूट डालो और शासन कारो’ की रही है।

आधुनिक समय की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाओं में से व्यक्ति की आस्था उठ गई। विषम आर्थिक व्यवस्था के कारण ही समाज में तीन वर्ग हुए - उच्चवर्ग, मध्यमवर्ग और निम्नवर्ग। उच्चवर्ग या पूँजीपति वर्ग के शोषण से जकड़ा मध्यमवर्ग और निम्नवर्ग दिन-प्रतिदिन अवनति के गड्ढे में गिरता जाने लगा। अर्थ पर मुट्ठी भर लोगों के अधिकार ने आम जनता को भूखमरी औरा बदहाली की स्थिति में जीने के लिए विवश कर दिया।

राजनीति की ऐसी ही लघुकथाओं पर विचार किया गया है। जैसे- प्रकाश जैन की ‘विविश भूख’ नामक लघुकथा में एक नेताजी को हलका-सा दिल पड़ा था। डॉक्टरों ने उन्हें पूर्ण विश्राम के लिए काह। नेताजी यदि विश्राम करते तो उन्हें कुछ नहीं होता परन्तु नेताजी के यहाँ दरबार नहीं लगा तो वे नेताजी कैसे? उन्होंने

अपने दिल के दौरे की सूचना अख़बारवालों को दे दी। दूसरे कदन ''लोगों का तांता लग गया। परिवार अभिभूत और नेताजी हर आदमी को बीमारी की तफसील देते रहे और हर क्षण अपनी महानता से दीप्त होते रहे।''[पप] पूरे दिन उन्हें एक क्षण के लिए भी ँविश्राम नहीं मिला। रात को दिल का दौरा तेज पड़ा। डॉक्टर भाग–दौड़ करते रहे लेकिन नेताजी इस दुनियाँ से चले गये प्रसिद्धि का लालच नेता को इस दुनियाँ से चले गये प्रसिद्ध का लालच नेता को इस दुनियाँ से उठा ले गया।

नरेशचंद 'नरेश' ने 'कुत्ते और कुत्ते' लघुकथा में चमचों की नेता के प्रति श्रद्धा कैसी होती है, इसका अंकन किया है। वे लोग अपने स्वार्थ के लिए किस हद तक गिर सकते हैं, इसका अंकन किया है। नेता ने अपने अनुयायिय को जब कहा कि 'वे सब कुत्ते है।' तो उन्होंने उसे स्वीकारा कि वे सब कुत्ते हैं। सभी से नेता ने कागज पर लिखवाया कि वे सब डरपोक कुत्ते हैं। इतना ही नहीं उन्होंने उनसे लिख्वावा लिया। ''साँप के समान तुम सबों के दाँत हमने पहले ही तोड़ दिये थे, जिससे तुम काटना भी भूल गये हो। अब लिखो, हम चाहते हैं, हमारी टेढ़ी दुम जो सीधी नहीं हो सकी हैं..... काट दी जाए.....''[पपप] सब ने लिखकर हस्ताक्षर कर दिये। उनके जाते ही नेता ने कहा कि अब उसे पालतू गुलामों से कोई खतरा नहीं है। जैसे ही चमचे बाहर गये उन्होंने हुक्म दिया था दिया था कि उनकी दुम काटकर फिर उन्हें रोटी दे दी जाए। हुकुम देकर जैसे ही वे उठे उन्हें लगा..... ''उनके भी कुत्तों जैसी एक दुम निकल आयी है, जो टेढ़ी है....।''[पअ] नेता को भी किसी के सामने झुकना पड़ता है। वह भी किसी के लिए कुत्ता है। नेतागीरी में 'कुत्तावाद' चलता है। लेखक ने उनकी कुत्तों जैसी लार टपकने या टपकानेवाली प्रकृति पर व्यंग्य किया है।

समग्रालोचन के पश्चात् हमें यह विश्वास हो जाता है कि राजनीति सचमुच एक खेल है। पहले पैसे जमा करों, बाँटों, वोट बटोर लो और फिर पाँच साल तक

पैसे जमा करते रहो। यह कुर्सी का खेल है, जो इसे बचाता है, वही सिकन्दरं नेता को सबसे पहले खादी की सफेद पोशाक पहननी चाहिए। उसे खोखली हँसी की प्रैक्टिस करनी चाहिए। उसकी चमड़ी गेंडे की तरह होनी चाहिए और उसने बेशर्मी का सहारा लेना चाहिए उसमें गाली पचाने की और इाईकमान के आज्ञा पालन करने की अक्ल चाहिए। पब्लिसिटी का इतना भ्ज्ञी चस्का न हो कि जान चली जाए। उसे एकलव्य की नीति अपनानी चाहिए। अपने शब्द रूपी बाण से वह विरोधियों का मुँह बंद रख सके। उसे पारस जैसे होना चाहिए। चुनाव के समय जाति का गणित सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। लोग उसी के आधार पर तो चुनाव लड़ते हैं। नेता समाजवाद का नारा लगाकर आम जनता को लुभाता है और पूँजीवादियों से धन लेकर चुनाव लड़ता है। नेता का शव तक नहीं जलता। उसे आस बनी रहती है कि उसे फिर से कुर्सी मिलेगी परन्तु उसके खिलाफ जब जाँच आयोग बिठाने की बात होती है तब वह तुरंत जलता है। टोपी बिना नेता हनीं होता। नेता टोपी के लिए रोता है। कुर्सी के लिए रोता है। रो-रोकर पहले प्राप्त करता है और जनता को रूलाता है। आज यदि कोई सुदामा उसके पास पहुँचे तरे भी वह मुफ्त में काम नहीं करता। एक स्थान पर तो एक व्यंग्यकार ने उसकी तुलना डाकू से की है। एक इलाके में दो डाकू रह नहीं सकते है।

अपने ध्वज के प्रति नेता कितना निष्ठावान है, इसे उजागर करने हेतु कीकमलकुमार ने 'देशभक्त' लघुकथा का सृजन किया है। नेता ने अपनी कार से देखा कि बारह-तेरह साल का लड़का जब गुल्ली का निशाना साधता था उसके कूल्हों पर 'चक्र' उभरकर आता था। नेता ने उस लड़के बालों को पकड़कर उसे पूछा कि उसने यह कहाँ से चुराया। लड़के ने ईमानदारी से कहा कि ये सामने की कोठी से उड़कर आया और उसकी माँ ने उसे काटकर रात में सिलवा दिया। नेता को उसकी सच्चाई पर भरोसा नहीं था। उसने उसे इतना पीटा और कच्छे को उतारने के लिए कहा। लड़का सबके सामने कैसे नंगा होगा? उसने कमीज को टांगों के बीच

दबाया औश्र कच्छा उतार दिया। नेता ने जब अंगूठे और अंगुली के पोरों से कच्छे को उठाया– ''पेशाब और पसीने की मिली–जुली गंध का भभका दिमाग को भन्ना गया। हाथ से कच्छा छूटकर गिर पड़ा। नेता पल भर रुका–अबकी दृढ़ निश्चय के साथ उसने ही कच्छे को उठाकर कार के बोनट पर रखा।''[अ] उसे लगा उसने झंडे को उचित मान दे दिया। राष्ट्रीय गान की मुद्रा में थोड़ी देर खड़े रहकर वह चल देता है। वे यदि सच्चे देशभक्त हो तो ध्वज की अपेक्षा देश के लिए कुछ करें।

'कानून की महत्ता' अजात शत्रु ने अपनी इस लघुकथा में उन विधायकों पर व्यंग्य किया है जो छोटी–छोटी बातों को लेकर वोटरों पर दबाव डालते हैं। एक विधायक को जब पता चला कि उनके गाँव का मास्टर चोरी–चोरी उनके प्रत्याशी के विरोध में प्रचार कर रहा है। तो वे उसके पास जाकर डाँटते हुए कहते हैं– ''मिठाईलाल मास्टर, तुमको मालूम है कि सरकारी कर्मचारी राजनीति में भाग नहीं ले सकता ?''[अप] मास्टर भी कम चालाक न था उसने कहा कि उन्हें गलत सूचना मिली है– 'मैं तो आपके प्रत्याशी का ही समर्थन कर रहा हूँ। उसका विरोध तो हमारे हेडमास्टर कर रहे हैं।' विधायकजी प्रसन्न होकर हेडमास्टर को डाँटने चले गये। इसका मतलब ये लोग चाहे जो कर सकते थे परन्तु आम आदमी ऐसा नहीं कर सकता था।

निष्कर्षः–

राजनीति की सबसे अच्छी मिसाल तो यही है कि राम को गद्दी मिलने के बजाए वनवास मिला। सभी व्यंग्यकारों ने अपने–अपने ढंग से राजनीति की हर बात का मजाक उड़ाया है परन्तु उनका व्यंग्य इतना सटीक है कि नेता भले ही तिलमिलाए पर कुछ कर नहीं सकते कारण बात सच्ची है। आधुनिक लघुकथाकारों ने परिवर्तित सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व धार्मिक परिस्थितियों के कारण आए बदलाव को संवेदना के स्तर पर निरूपित किया है। लघुकथाकारों ने जिस परिवर्तन

को समझा, झेला, उस युग की जीवंत व सार्थक अभिव्यंजना उनकी कृतियों में विद्यमान है। लघुकथाकारों ने शोषण में पिसते आम आदमी की पीड़ा को पहचाना है और अपने चारों ओर के विसंगत परिवेश को अपनी लघुकथा का कथ्य बनाया है। समकालीन परिवेश के प्रति सजग लघुकथाकारों ने पिरवेश के बदलाव को पहचाना है और अपनी लघुकथा में इन परिवेश की प्रखर अभिव्यक्ति की है।

संदर्भग्रंथ

[i] स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, डॉ, सुभाष कश्यप, पृ19

[ii] हिंदी लघुकथाओं में व्यंग्य, डॉ. महादेव काशिनाथ कलशेट्टी, पृ. 104

[iii] कुत्ते और कुत्ते, नरेशचंद 'नरेश', सारिका, मार्च 1984, पृ.59

[iv] हिंदी लघुकथाओं में व्यंग्य, डॉ. महादेव काशिनाथ कलशेट्टी, पृ. 105

[v] हिंदी लघुकथाओं में व्यंग्य, डॉ. महादेव काशिनाथ कलशेट्टी, पृ. 108

[vi] सहयोग, प्यासा रूपक, सारिका, 16 अप्रैल1980, पृ.53